XVII / 13

From:- K. N. Malaviya.
Deoli Camp jail,
Deoli. Ajmer, Rajputana.

DEOLI DETENTION CAMP
CENSORED AND PASSED
Date
Superintendent.

प्रिय बड़ी कान्ता जी,

आपकी कविता की चिट्ठी से मालूम हुआ कि आप
का Parole Indifinite समय तक के लिये मंजूर हो गया।
इसे सुनकर बहुत खुशी हुई, ऐसे समय में आपका घर पर रहना अच्छा
ही है। मैंने दो पत्र आप के पास भेजे, पर एक का भी जवाब
नहीं आया। आप कितने परेशान हैं, मैं खुद भी समझता हूँ।
आज तीसरी दफा मैं फिर भेज रहा हूँ और उम्मीद कर रहा हूँ कि
आप का पत्र मुझे एक सप्ताह के अन्दर मिल जायगा। यहाँ तो पत्र बहुत
जल्दी ही मिल जाता है। खासकर आप का पत्र तो बहुत जल्दी मिल
जाता है। हाँ हालों के पत्रों की ~~[illegible]~~ दूसरी बात है। आपने कहा था कि
पत्र बराबर भेजते रहना, इसी से मैंने आपके हुक्मों को
पालन भी किया। पर ताज्जुब है कि आप का पत्र मुझे न
प्राप्त हो सका। उधर तो कई पत्र मिले थे। आपको मेरी कितनी
फिक्र रहती है, कह नहीं सकता। हो सकता है कि आप
इस बात को न ~~[illegible]~~ सोचें. पर मेरा दिल ही जानता है कि जो
दिन गुजरते ही रहे हैं मुझे कुछ फ़िक्र न थी, पर [illegible]
तो मैं दिन-रात सोचता रहता हूँ। मैं फिर भी आप को
परेशान करने के लिये ही पत्र लिख रहा हूँ। दुनिया का
यही रवैया है। सभी मतलबी होते ही उनमें से F

(2)

[redacted]

मैं भी हूँ। अगर अब के बाद भी पत्र भेजेंगे, उसमें भी आप के
बारे में ठीक पता नहीं चलेगा। पुलिस ठीक से चल रहा है कि नहीं।
कुछ बात के एक प्रार्थना-पत्र मेरे नाम भेज दिया था। ~~[illegible]~~
आज कल मेरी बात कुछ भी नहीं है। गर्मी भी आ गयी।
[redacted] यदि हो सके तो (२०) रुपये भेज
दें। [illegible] छः महीने के लिये काफ़ी हो जायगा। [illegible] तकलीफ़
के लिये माफ़ करना। मजबूर हो कर मुझे लिखना पड़ा।
मैं लिखना नहीं चाहती थी। [illegible] आज कल आप की
हालत कुछ अजीब सी होगी। आप कितने परेशान होंगे यह
तो मैं स्वयं देख चुकी हूँ। ख्याल है कि आप मेरे ऊपर
पहले की ही दया रखेंगे। [redacted]
। आप आजाद और बाल-बच्चे, तथा
दूसरे भाइयों को आराम मैंने दिया है। इस लिये यदि आप
भेजें तो अपने नाम से भेजे जायेंगे [redacted]
। पता और कि ऊपर लिख दिया है, उसी के मुताबिक
भेज दीजियेगा। यदि इसमें किसी तरह की आप को परेशानी
हो तो आप परेशान न होना। मुझे तो पता ही है, इतने बरसों
तकलीफ़ उठायें। हाँ, घर को देख-भाल रखियेगा।
भूल मत जाइयेगा। शायद घर से इसके लिए कोई न कह सकेगा,
या मेरी प्रार्थना है कि आप घर को मेरे लिये यात्रा [illegible]

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

कहते रहियेगा. तो बड़ा प्रेम होगा। पता नहीं कि पापा
के दर्शन कब होंगे। अब तो पता नहीं कितने दिन रहना
होगा। यों रहने से मैं नहीं घबराता, पर कभी २
या ३ वर्ष में कुछ चिन्ता हो जाती है। [redacted]
का पत्र जब तक न मिलेगा, तब तक कुछ काफी
चिन्ता रहेगी। अभी तक मुझे तुम्हारी कुछ भी चिन्ता
नहीं रहती थी, पर अब तो मुझे कितना याद आता है
कह नहीं सकता। आप अब कुछ दूसरी ही तरह सोचें
किन्तु मैं तुम्हें अब कितना मानता हूँ, मेरा दिल जानता है।
यदि जीवित रहे तो फिर कभी आप की सेवा में
रहूँगा [redacted]
कितना [redacted]
देखा था। [redacted]
तो उम्मीद है कि आप कुछ
कोशिश न करेंगे और पत्र राजी खुशी का हाल
देते रहेंगे। सबको भी, तुलसी भाई से प्रणाम कहना।
[redacted] आप स्वयं सब जानते हैं। और फिर कभी।
प्रणाम।

आपका
कं० पा०